इनकी नज़रों में बाबा...

स्वयं बाबा ने दिया वरदान...

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जब परिचय हुआ। तब मेरी उम्र लगभग 14 साल की थी। हम मुम्बई में रहते थे। एक बार जब दादी बृजेन्द्रा जी होली के त्योहार के निमित्त आबू जाने लगीं तो उनके साथ नानी माँ, मैं और मेरी लौकिक बड़ी बहन भी माउण्ट आबू आये।

बाबा की पारखी दृष्टि

हम सभी तैयार होकर मम्मा बाबा के पास गये। वे संदली पर बैठे थे मानो कि राज दरबार लगी हो। उस समय देश में कोई ज़्यादा ब्रह्माकुमारी सेंटर नहीं खुले थे। मोहिनी बहन लखनऊ से आये थे, जगदीश भाई भी आये थे। हम थोड़े लोग थे। सभी दादियाँ भी आये हुए थे। वे भाई बहन भी थे जो बाबा के साथ कराची से ही यज्ञ में थे। दादी बृजेन्द्रा ने हमको बाबा मम्मा के सामने बिठाया। बाबा ने बहुत अच्छी तरह से हमें दृष्टि दी। बाबा पहचान गये कि ये बच्चियाँ कितनी सात्विक हैं। बाबा ने मुझे देखकर कहा कि यह मेरी बच्ची पूरे गुजरात का उद्धार करेगी। बाबा ने तभी से ही मुझे वरदान दे दिया था। हमको बाद में यह पता चला कि बाबा जब कराची में थे, तब भी कहते थे कि गुजरात के

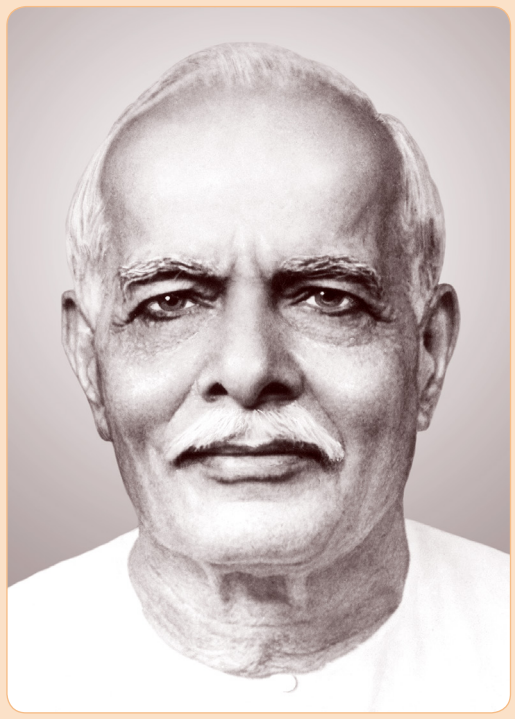

भावुक भक्त मुझे बहुत याद आते हैं। तो बाबा जब भी मुझे देखते थे तो यही कहते थे कि जब अहमदाबाद में सेंटर खुलेगा तो बच्ची को वहीं रखेंगे, बच्ची को वहीं के निमित्त बनायेंगे।

मम्मा जैसा बनने की लगन

हमने माउण्ट आबू में बहुत उमंग उत्साह से होली खेली। बाबा मुझसे पूछते थे कि मम्मा अच्छी लगती है? मैं कहती थी, हाँ बाबा। फिर पूछते थे, मम्मा जैसी बनेगी? मैं कहती थी, हाँ बाबा। मन में रहता था कि मुझे मम्मा जैसा बनना है। मम्मा की एकदम देवताई चाल थी। चलते समय कदमों की आवाज़ तक नहीं आती थी, पता भी नहीं चलता था। बाबा कुछ भी पूछते थे तो बहुत प्यार से जवाब देती थी। बाबा के साथ हम रम गये थे। महीनों बाबा के साथ रहे, घर जाने की इच्छा नहीं होती थी। हम बाबा को कहते बाबा हमको घर नहीं जाना है। बाबा प्यार से कहते... बच्ची, जाना तो होगा ही। तब हम मुम्बई आ गये।

मम्मा सदा सबको दैवी रूप में ही देखती

उस समय मुम्बई में कोई सेंटर न होने के कारण मधुबन से मुरली घर पर आने लगी। मुझे दो चोटी बनाने का बहुत शौक था। एक बार मम्मा ने कमरे में ले जाकर मेरी चोटी खोली और कहा, बच्ची मालूम है, देवियाँ दो चोटी नहीं करतीं। उन्हें कोई मिसाल देना होता था तो हमेशा देवताओं का मिसाल देकर समझाती थीं। रात्रि को गुडनाइट करने जाते थे तो भी बहुत प्यार से मिलती थीं। मैंने पक्का लक्ष्य रख लिया था कि मुझे मम्मा की तरह धारणाओ में पक्का बनना है। हमारा ध्यान मम्मा बाबा के सिवाय कहीं और गया ही नहीं। आज तक भी हम उनकी ही पालना में पलते आ रहे हैं। **- ब्र.कु. सरला,ग्राम विकास प्रभाग अध्यक्षा,गुज.**

बाबा ने मुझे नष्टोमोहा बना दिया...

सन् 1962 में जब दीदी चन्द्रमणि जी अमृतसर की पार्टी को बाबा से मिलाने मधुबन ले गयी थीं, तो मैं भी उसमें शामिल थी। मेरे जीवन में प्रभु-मिलन का वह स्वर्णिम अवसर आया जिसकी वर्षों से मेरे अन्दर तीव्र इच्छा थी। जब मैंने बाबा की दिव्य छवि को देखा तो उनकी शीतल और शक्तिशाली दृष्टि ने मुझे आत्म-विभोर कर दिया। बाबा ने मेरे दिल को द्रवीभूत करने वाला अलौकिक प्यार दिया तथा वरदान देते हुए कहा कि बच्ची बहुत नष्टोमोहा है, बहुत योगयुक्त है। बच्ची ने जल्दी ही अपने कर्मबन्धनों को काटा है – ऐसे कहते हुए बाबा ने दिल से मेरी बहुत प्रशंसा की और मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया।

बाबा के वो बोल मेरे लिए वरदान सिद्ध हुए

कुछ वर्ष अमृतसर सेवाकेन्द्र पर रहते हुए मुझे दीदी चन्द्रमणि जी की अलौकिक पालना मिलती रही और ईश्वरीय सेवा का कारोबार सम्भालने की कला भी प्राप्त हुई। उस पालना और प्रशिक्षण से मुझमें बहुत योग्यताएं भर गयीं। दीदी चन्द्रमणि जी के जीवन का प्रभाव इतनी गहरी रीति से मेरे जीवन पर पड़ा कि मुझमें निर्भयता और दैवीगुणों की धारणा प्रबल होती गयी। आयी हुई नई कन्याओं में ईश्वरीय धारणाओं के प्रति अभिरूचि बढ़ाने के कार्य की ज़िम्मेवारी भी दीदी मुझे देती थीं। उसमें भी मुझे अधिक सफलता दिन प्रतिदिन मिलती गयी। इस प्रकार ब्राह्मण परिवार में रहते ईश्वरीय सेवा करना और श्रेष्ठ धारणाओं को अपने जीवन में अधिक से अधिक अपनाते जाना, यह मेरे जीवन का अभिन्न अंग बन गया।

बाद में जब हम मधुबन में आये और बाबा से मिले तो बाबा ने कहा कि "बच्ची, तुम मीरा हो, तुम गुणवान हो, तुम अपने को नहीं जानती, बाबा तुम्हें जानता है, तुम बहुत अच्छी सेवा कर सकती हो" – ऐसे वरदानी बोलों से बाबा ने मेरा उमंग-उत्साह बढ़ाया। बाबा ने उस समय मुझे और विश्वरतन दादा को आबू के मिनिस्टर कॉटेज में वी.आई.पीज. की सेवा के लिए भेजा था। मेरी सेवा की लगन को देखकर बाबा ने कहा, "बच्ची, तुम पटना में सेवा करने जाओ।" पटना में ईश्वरीय सेवा के लिए जाना हुआ और वहाँ पर भी सेवा में बाबा के दिये वरदान अनुसार बहुत अच्छी सफलता मिलती गयी। वहाँ पर बनाया गया म्यूज़ियम उन दिनों बहुत ही अच्छा था जिसको बाबा ने नम्बर वन में रखा था। पटना से जब मैं मधुबन पार्टी लायी तो साकार बाबा ने कहा, "बच्ची ने देखो इतने बड़ों-बड़ों को लाया है, बच्ची सेवा करने में बहुत होशियार है, सफलता इसका जन्मसिद्ध अधिकार है।"

इस तरह अलौकिक जीवन में अनेक अलौकिक अनुभव हुए और होते ही रहते हैं। अभी सदा यही उमंग रहता है कि जल्दी से जल्दी अपनी सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करके इस वसुन्धरा पर आये हुए भगवान को प्रत्यक्ष करें, ताकि अन्धकार में भटकती हुई करोड़ों आत्मायें प्राण प्यारे बाप से मिलन मना सकें और उसके अविनाशी वर्से की अधिकारी बन सकें। हम भी अब जल्दी से जल्दी बाप समान बनें और बाबा की श्रेष्ठ आशाओं को पूरा करें – यही हमारे जीवन का लक्ष्य रहता है।

- राज बहन, नेपाल,काठमाण्डु

मुज़फ्फरपुर-बिहार। ज्ञानचर्चा के पश्चात् राज्यपाल महोदय सतपाल मलिक को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. रानी व अन्य।

कूच बेहर-प.बं.। आध्यात्मिक कार्यक्रम के दौरान सी.एल. बेलवा,डी.आई.जी.,बी.एस.एफ.को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सम्पा। साथ हैं ब्र.कु. पूनम तथा कप्तान रजनीश ।

वलसाड-गुज.। 'राजयोग-शिविर' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.रंजन, उपसचिव एस.के कृष्णा चैतन्य, ब्र.कु.सुरेखा, ब्र.कु.चंदन तथा अन्य।

सहरसा-बिहार। 'समाधान पाएं, खुशियाँ मनाएं' कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, संदीप भाई,पूणे, एस.पी अश्विनी कुमार, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु.स्नेहा, कृष्ण भाई तथा अन्य।

नई दिल्ली-नेब सराय। आई.यू.सी. कमेटी रूम,इग्नू सेंटर में 'इम्प्रूविंग एडमिनिस्ट्रेटिव स्किल एण्ड एम्पावरिंग ऑफ योर माइंड' कार्यक्रम में मुख्य अतिथि रजिस्ट्रार डॉ.जितेन्द्र शिवत्व तथा उपाध्यक्ष एस.बी. अरोरा को ईश्वरीय सौगात व प्रसाद देते हुए ब्र.कु.योगिनी एवं ब्र.कु. पीयूष।

समस्तीपुर-बिहार। 'किसान सशक्तिकरण अभियान' के कार्यक्रम में किसानों को जागरुक करते हुए ब्र.कु. भाई। साथ हैं ब्र.कु. सविता व अन्य भाई बहनें।